International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भूमिका : एक ऐतिहासिक अध्ययन

शोधार्थी - रीना कुमारी

विक्रम विश्वविद्यालय. उज्जैन

सारांश - भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास केवल पुरुष नेताओं और उनके संघर्ष तक सीमित नहीं था। महिलाओं ने भी इस महाकाव्य समान आंदोलन में उल्लेखनीय और निर्णायक योगदान दिया। प्रारंभिक दौर में रानी लक्ष्मीबाई और बेगम हज़रत महल जैसी वीरांगनाओं ने प्रत्यक्ष सैन्य नेतृत्व संभाला, वहीं 20वीं शताब्दी में सरोजिनी नायडू, सुचेता कृपलानी और अरुणा आसफ़ अली जैसी नेताओं ने जनांदोलनों और क्रांतिकारी गतिविधियों को दिशा दी। इस शोध-पत्र का उद्देश्य स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की वास्तविक भूमिका का ऐतिहासिक विश्लेषण करना है। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि महिलाओं का योगदान बहुआयामी था—राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक सभी स्तरों पर—परंतु मुख्यधारा के इतिहास लेखन में इसे अपेक्षित स्थान नहीं दिया गया।

मूलशब्द – भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, महिलाओं, संघर्ष, नारीवादी, क्रांतिकारी

■ परिचय –

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन विश्व इतिहास की सबसे लंबी और जटिल राजनीतिक प्रक्रियाओं में से एक रहा है। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से लेकर 1947 की आज़ादी तक यह संघर्ष अनेक रूपों में सामने आया। सामान्यतः इतिहासकारों ने इसे महात्मा गांधी, पंडित नेहरू, सुभाषचंद्र बोस और अन्य पुरुष नेताओं के नेतृत्व से जोड़ा, किंतु इससे आंदोलन की आधी तस्वीर छिप जाती है।

महिलाओं ने इस संघर्ष में केवल सहायक भूमिका नहीं निभाई बल्कि स्वयं नेतृत्वकर्ता और प्रेरक भी बनीं। उन्होंने सामाजिक बहिष्कार, आर्थिक त्याग, जेल यात्रा और कभी-कभी हिंसक प्रतिरोध तक का मार्ग चुना। इस शोध का केंद्रीय प्रश्न यही है कि महिलाओं की यह बहुआयामी भागीदारी किस हद तक निर्णायक थी और क्यों इतिहास लेखन में इसे अपेक्षाकृत कम दर्ज किया गया।

■ शोध प्रश्न -

1. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी किन-किन रूपों में प्रकट हुई?

2. क्या महिलाओं का योगदान इतिहास लेखन में पर्याप्त रूप से परिलक्षित हुआ है?

3. महिलाओं की सक्रियता ने राष्ट्रीय आंदोलन की दिशा और चरित्र को किस प्रकार प्रभावित किया?

- **परिकल्पना -**

महिलाओं ने स्वतंत्रता आंदोलन को निर्णायक बल दिया, किंतु औपनिवेशिक और पुरुष-प्रधान दृष्टिकोण के कारण उनकी भूमिका का समुचित मूल्यांकन नहीं हुआ।

- **साहित्य समीक्षा** -
- भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर विस्तृत शोध कार्य उपलब्ध है, किंतु महिलाओं की भूमिका पर विशेष अध्ययन अपेक्षाकृत कम मिलते हैं।बिपिन चंद्र की पुस्तक **India's Struggle for Independence** स्वतंत्रता संग्राम का व्यापक विवरण देती है, परंतु इसमें महिलाओं का उल्लेख सीमित है।
- **गैल ओमवेड्ट** ने अपने लेखों में बताया कि स्वतंत्रता संघर्ष भारतीय महिलाओं के लिए राजनीतिक पहचान और आत्मनिर्भरता का अवसर बना।
- **कुमकुम रॉय** ने इस ओर ध्यान दिलाया कि पारंपरिक इतिहास लेखन ने महिलाओं के योगदान को हाशिए पर रखा।
- राधा कुमार की **The History of Doing** महिलाओं की सक्रियता का चित्रण करती है और यह दिखाती है कि कैसे स्त्रियों ने अपने सामाजिक आंदोलनों को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ा।नवीन नारीवादी शोध इस बात पर बल देता है कि बिना लैंगिक दृष्टिकोण (gender perspective) के स्वतंत्रता आंदोलन का अध्ययन अधूरा है।

- **शोध पद्धति -**

यह अध्ययन गुणात्मक विश्लेषण (qualitative analysis) पर आधारित है। मुख्य रूप से द्वितीयक स्रोतों—किताबें, शोध-लेख, जर्नल्स, आर्काइव दस्तावेज़ और पत्र-पत्रिकाएँ—का उपयोग किया गया है।

महिलाओं की भूमिका को चार श्रेणियों में विश्लेषित किया गया है:

1. सैन्य और प्रत्यक्ष नेतृत्व

2. सत्याग्रह और असहयोग आंदोलनों में सक्रियता

3. क्रांतिकारी और भूमिगत गतिविधियाँ

4. सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक योगदान

- **मुख्य विश्लेषण -**

1. 1857 का विद्रोह और महिलाओं का आरंभिक नेतृत्व

रानी लक्ष्मीबाई का साहस और नेतृत्व भारतीय महिलाओं की राजनीतिक शक्ति का प्रथम प्रतीक बना। बेगम हज़रत महल ने अवध क्षेत्र में विद्रोह को संगठित किया और ब्रिटिशों के सामने मोर्चा लिया। इन उदाहरणों ने यह साबित किया कि महिलाएँ युद्ध और राजनीति दोनों क्षेत्रों में सक्षम थीं।

2. गांधी युग और महिलाओं का राजनीतिक जागरण

महात्मा गांधी ने जब सत्याग्रह और असहयोग आंदोलन चलाए तो महिलाओं को इसमें व्यापक रूप से शामिल किया। कस्तूरबा गांधी ने आश्रम और आंदोलनों दोनों में सक्रिय भागीदारी की। सरोजिनी नायडू ने नमक सत्याग्रह का नेतृत्व किया और उन्हें स्वतंत्र भारत की पहली महिला गवर्नर बनने का गौरव प्राप्त हुआ। सुचेता कृपलानी ने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और बाद में स्वतंत्र भारत की पहली महिला मुख्यमंत्री बनीं।

3. क्रांतिकारी आंदोलनों में महिलाओं की भागीदारी

कल्पना दत्त और प्रीतिलता वाडेदार ने चिटगाँव शस्त्रागार कांड में प्रत्यक्ष हिस्सा लिया।

कनकलता बरुआ असम में आंदोलन की अग्रणी थीं और ब्रिटिश गोलियों का शिकार बनीं।

इन घटनाओं ने यह सिद्ध किया कि महिलाएँ केवल अहिंसक आंदोलनों तक सीमित नहीं थीं बल्कि सशस्त्र प्रतिरोध में भी आगे बढ़ीं।

4. जनांदोलनों और सामाजिक-आर्थिक गतिविधियों में महिलाओं की भूमिका

महिलाओं ने विदेशी कपड़ों का बहिष्कार किया और घर-घर में चरखा चलाकर स्वदेशी को लोकप्रिय बनाया।

उन्होंने सत्याग्रह और धरनों में भाग लिया, जेल गईं और परिवार की जिम्मेदारियों के साथ आंदोलन जारी रखा।

कई स्थानों पर महिलाओं ने अपने समुदाय को संगठित कर आंदोलन को grassroots स्तर तक पहुँचाया।

5. महिला संगठनों का योगदान

अखिल भारतीय महिला सम्मेलन (AIWC) जैसी संस्थाओं ने महिलाओं को राजनीतिक रूप से सशक्त बनाया। इन संगठनों ने महिलाओं की शिक्षा, सामाजिक सुधार और स्वतंत्रता आंदोलन को जोड़ने का कार्य किया।

- **परिणाम -**

- महिलाओं का योगदान स्वतंत्रता आंदोलन के हर चरण में दिखाई देता है—1857 से लेकर 1947 तक।
- उनकी भूमिका केवल प्रतीकात्मक नहीं बल्कि नेतृत्वकारी भी थी।
- महिलाओं ने सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक सभी क्षेत्रों में सक्रिय भागीदारी की।
- पारंपरिक इतिहास लेखन ने उनकी भूमिका को पर्याप्त महत्त्व नहीं दिया, जिससे उनका योगदान आंशिक रूप से ही सामने आ पाया।

- **चर्चा -**

इस शोध से यह स्पष्ट है कि महिलाओं ने स्वतंत्रता आंदोलन को निर्णायक दिशा दी। उन्होंने सार्वजनिक जीवन में प्रवेश कर भारतीय समाज की पारंपरिक धारणाओं को चुनौती दी। किंतु पितृसत्तात्मक संरचना और औपनिवेशिक मानसिकता के कारण इतिहास लेखन में उनकी भूमिका को द्वितीयक बना दिया गया। आवश्यकता इस बात की है कि इतिहासकार अब "gender-inclusive history" की ओर बढ़ें ताकि आने वाली पीढ़ियाँ स्वतंत्रता आंदोलन को संपूर्ण दृष्टि से देख सकें।

- **निष्कर्ष -**

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन महिलाओं के योगदान के बिना अधूरा है। रानी लक्ष्मीबाई और बेगम हज़रत महल के सैन्य नेतृत्व से लेकर सरोजिनी नायडू और सुचेता कृपलानी के राजनीतिक नेतृत्व तक, और असंख्य अनाम स्त्रियों की त्यागपूर्ण सक्रियता तक—हर स्तर पर महिलाएँ इस संघर्ष का अभिन्न हिस्सा थीं। उनकी भागीदारी ने न केवल स्वतंत्रता संग्राम को शक्ति दी बल्कि भारतीय समाज को भी आधुनिकता और लैंगिक समानता की ओर अग्रसर किया।

✓ संदर्भ सूची -

1. Chandra, Bipan. India's Struggle for Independence. Penguin, 1988.

2. Omvedt, Gail. Gender and Politics in India. New Delhi, 1993.

3. Roy, Kumkum. The Power of Gender in Indian History. Oxford University Press, 2010.

4. Kumar, Radha. The History of Doing: Movements for Women's Rights and Feminism in India. Zubaan, 1997.

5. National Archives of India, New Delhi.

6. Selected journal articles on women in India's freedom struggle.